MAA OMWATI DEGREE COLLEGE

HASSANPUR

NOTES

SUBJECT: - Pol. History of India-I

CLASS:- M.A (HISTORY 3RD SEM.

(UNIT)-(I)

Ques 1. बक्सर के युद्ध के कारण, परिणाम का वर्णन करो?

बक्सर का युद्ध (1763 ई. 1764 ई.)

कारण

1. मीर कासिम जो बंगाल का नवाब था योग्य तथा शासकीय समस्याओं को सुलझाने में विशेष क्षमता रखता था।
2. अंग्रेजों ने इसे इसलिए नवाब बनाया था कि यह कठपुतली बनकर रहेगा परन्तु यह उनका भ्रम था। जब यह बिना अंग्रेजों की सहायता से बंगाल की सभी कठिनाइयों को एक-एक करके दूर करने लगा, तो अंग्रेजों ने इसकी नियुक्ति को अपनी भूल माना।
3. मीर कासिम की जो ई० 1760 में अंग्रेजों से संधि हुई थी उसे वित्तीय कठिनाई के कारण मीर कासिम ने नहीं माना अतः यह बक्सर के युद्ध का आधार बना।
4. मीर कासिम ने अंग्रेजों की नावों को जो युद्ध सामग्री से भरी पटना जा रही थी को मुंगेर में रोक लिया, इस घटना से रुष्ट होकर पटना में अंग्रेज सेनापति एलिस ने नवाब पर आक्रमण कर दिया जो बक्सर के युद्ध का कारण बना।

मुंगेर को राजधानी बनाने के बाद नवाब ने इसकी किलेबन्दी करवाई यहाँ अस्त्र - शस्त्र के निर्माण का कारखाना खोला, इससे भी अंग्रेज नराज हुए मीर कासिम ने पटना में अंग्रेज सेना के लगभग 200 कैदियों को तलवार के घाट उतार दिया गया, इस घटना को इतिहास में पटना हत्याकांड के नाम से जाना जाता है। कम्पनी की सेना के मेजर एडम्स ने मीर कासिम को हराकर पटना पर अधिकार कर लिया, मीर कासिम ने इस हार के कारण भागकर अवध के नवाब शुजाउद्दौला के यहाँ आश्रय लिया। नवाब ने आन्तरिक व्यापारिक करों को समाप्त कर दिया इससे अंग्रेज ने नवाब का विरोध किया, नवाब ने अंग्रेजों के दबाव को न माना जिससे दोनों में संघर्ष होना आवश्यक हो गया।

तात्कालिक कारण :-

पटना का हत्याकांड यह हत्याकांड नवाब के अंग्रेज कैदियों के मारने के आदेश देने से हुआ, इस हत्याकांड को चरितार्थ किया, समरू नाम से प्रसिद्ध एक जर्मन वाल्टर राइन हार्ट ने, इसे ही बक्सर के युद्ध का तत्कालिक व प्रमुख कारण माना जाता है।

बक्सर युद्ध के परिणाम :-

बक्सर का यह युद्ध एक निर्णायक युद्ध था, यह युद्ध जितनी विस्तृत से लड़ा गया, परिणामों की दृष्टि से भी उतना ही महत्वपूर्ण था, इस युद्ध ने प्लासी के निर्णयों को पुष्टि कर दी।

परिणाम :-

1. बक्सर का युद्ध प्रत्यक्ष दृष्टिकोण से प्लासी युद्ध से अधिक महत्वपूर्ण था।
2. बक्सर के युद्ध ने मुगल शासकों की कमजोरी को पोल खोल दी।
3. इस द्वितीय युद्ध के पश्चात अंग्रेजों को शाह आलम पेंशनधारी हो गया।
4. बक्सर के युद्ध के उपरान्त अंग्रेजों को बंगाल, बिहार व उड़ीसा की दीवानी, मिली जिससे

आय अधिक बढ़ी
इस युद्ध से अंग्रेजों के लिए दिल्ली का मार्ग खुला।
क्लाइव ई. 1757 बंगाल का गवर्नर बना इलाहाबाद की संधि क्लाइव की। एक महान् उपलब्धि मानी जाती है।

अकबर के युद्ध मुगल सम्राज्य के पतन के कारण और इस पतन में औरंगजेब की भूमिका?

मुगल सम्राज्य के पतन के कारण

बाबर से लेकर औरंगजेब तक का काल मुगल साम्राज्य के उत्थान एवं विकास का काल था परन्तु ई० 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के साथ ही मुगल साम्राज्य की शक्ति एवं प्रतिष्ठा में कमी आने लगी मुगल दरबार संघर्षों दुर्घटनाओं कुचक्रों षड्यन्त्र एवं राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का अखाड़ा बन गया, औरंगजेब के बाद के मुगल सम्राटों पर अमीर वर्ग का नियन्त्रण बढ़ने लगा तथा अक्सर सम्राट उनके हाथ में कठपुतली बनकर रह गया,

1. जागीरदारी संकट :- इन विद्वानों की मान्यता है कि मुगल साम्राज्य की स्थिरता के लिए इन दोनों प्रणालियों का स्पष्ट ढंग से कार्य करते रहना अति आवश्यक था मुगल राज्य में कुलीन मुख्य राज्य अधिकारी होते थे जिन्हें उसके स्थान के अनुसार पदवी दी जाती थी इन्हें 'मनसब' कहा जाता था, 'मनसबदारों' को वेतन भूराजस्व के रूप में मिलता था। मनसबदार को एक फौज रखनी पड़ती थी सैनिकों को वेतन तथा फौज का रखरखाव जागीर की आमदनी से होता था, सैनिक मनसबदार को भूराजस्व वसूलने में मदद करते थे इस प्रकार पूरा प्रशासन भूराजस्व की वसूली पर आधारित था। इसलिए मुगल सम्राटों द्वारा कृषि को बढ़ावा दिया गया जागीरदारी व्यवस्था में आये संकट ने राज्य की सैनिक शक्ति पर बुरा असर डाला क्योंकि जागीरों की आमदनी कम हो जाने से जागीरदार के लिए पर्याप्त मात्रा में सैनिक रखना असंभव हो गया।

2. कृषि व्यवस्था का संकट :-

प्रो० इरफान हबीब ने मुगलों की राजस्व प्रणाली व्यवस्था में दोषों को साम्राज्य के पतन के लिए जिम्मेदार माना है, उन्होंने लिखा है कि साम्राज्य की सुरक्षा के लिए बड़ी - बड़ी सेनाएं रखी जाती थी इस कारण उनका खर्च चलाने के लिए राजस्व की दर भी ऊँची रखी जाती थी दूसरी तरफ कुलीन अपनी जागीरों से अधिक राजस्व प्राप्त करना चाहते थे, वे अपने हितों का ध्यान रखते थे तथा उन्हें कृषक की बर्बादी की कोई चिन्ता नहीं होती थी, कुलीनों का एक जागीर से दूसरी जागीर में स्थानान्तरण होता रहता था, इस कारण वे कृषि संबंधी सुधारों में भी रुचि नहीं लेते थे, इस प्रकार किसानों पर बोझ बढ़ता गया तथा उन्हें जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित होना पड़ा, कई बार किसान खेत छोड़कर भाग जाते थे तथा पूरा गांव वीरान हो जाता था,

3. स्वेच्छाचारी एवं निरंकुश शासन पद्धति :

मुगल शासन अत्यधिक केन्द्रीयकृत शासन था जिसमें शासन की अधिकांश शक्तियां सम्राट के हाथों में होती थी मन्त्री तथा अधिकारी केवल सम्राट के आदेशों का पालन करते थे, शासन की नीतियों का निर्धारण स्वयं सम्राट करता था, इस प्रकार की शासन पद्धति सम्राट की व्यक्तिगत शक्ति पर आधारित थी जब तक शासक योग्य एवं शक्तिशाली रहे, इस प्रकार का शासन आसानी से चलता रहा परन्तु शासन की बागडोर जब औरंगजेब के निर्बल उत्तराधिकारियों के हाथों में आई तो वे इस प्रकार के शासन को चलाने में असमर्थ रहे,

4. उत्तराधिकारी के नियम का अभाव :-

मुगलों में इस प्रकार का कोई नियम नहीं था कि बादशाह के बाद उसका उत्तराधिकारी कौन होगा ? बादशाह की मृत्यु के बाद तथा कभी - कभी उसके जीवन

ाल में ही जैसा कि शाहजहाँ के समय में हुआ उसके तों में युद्ध छिड़ जाता । विजयी राजकुमार अपने प्रतिद्वन्दियों को मौत के घाट उतार देता था, जैसा कि शाहजहाँ और औरंगजेब ने किया था।

मुगल अमीरों एवं सरदारों का चरित्रहीन होना :-

अकबर जहाँगीर तथा शाहजहाँ के अमीर बैरमखां, मुनीमखां, मुजफ्फरखां, रहीमखां, एतमादुद्दौला, महावतखां, आसफखां आदि योग्य थे, जिन्होंने मुगल शासन को विकसित किया परंतु औरंगजेब के बाद के मुगल सम्राटों की चरित्रहीनता के कारण मुगल सरदारों का नैतिक पतन हो गया। वे विलासी तथा आलसी बन गये, परिणामस्वरूप उनकी शारीरिक, मानसिक तथा चारित्रिक शक्ति समाप्त समाप्त हो गई,

अमीरों के षड्यन्त्र एवं दलबन्दी :- औरंगजेब के बाद निर्बल मुगल बादशाहों के समय में अमीरों को कुचक्र चलाने तथा अपनी शक्ति बढ़ाने का अच्छा अवसर मिल गया, मुगल साम्राज्य की स्थापना एवं उसे उन्नति की चरमसीमा पर पहुँचाने वाला अमीर वर्ग आपसी कलहों एवं व्यक्तिगत स्वार्थों में लीन हो गया। बाद के मुगल सम्राटों के शासनकाल में अमीर वर्ग दो प्रमुख दलों— तुरानी तथा ईरानी में बँट गया, ये दोनों दल एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए षड्यन्त्र करने लगे जिससे मुगल साम्राज्य को भारी हानि उठानी पड़ी,

7. मुगल साम्राज्य का आर्थिक दिवालियापन :-

मुगल साम्राज्य को आत्म निर्भर तथा आर्थिक दृष्टि से मजबूत बनाने में मुगल सम्राट अकबर की भू-राजस्व एवं अन्य नीतियों की उल्लेखनीय भूमिका थी परन्तु उसके उत्तराधिकारियों के काल में आर्थिक ढाँचा बिल्कुल बिगड़ने लगा क्योंकि उन्होंने अकबर के नियमों एवं नीतियों की उपेक्षा की, औरंगजेब कालीन दक्षिण युद्धों ने सम्राज्य को बुरी तरह कमजोर बना डाला,

औरंगजेब का उत्तरदायित्व

मुगल साम्राज्य के पतन के लिए औरंगजेब को मुख्य रूप से दोषी माना जाता है। औरंगजेब के उत्तराधिकारी तथा कुलीन तो पूर्वजों की छाया मात्र थे तथा वे औरंगजेब द्वारा की गई गलतियों को सुधारने में असमर्थ थे। औरंगजेब की नीतियों एवं कार्यों का विवरण इस प्रकार है:—

(i) औरंगजेब की हिन्दू विरोधी नीति :-

औरंगजेब की धार्मिक नीति बड़ी मूर्खतापूर्ण थी, वह राज्य की बहुसंख्यक हिन्दू जनता पर धार्मिक अत्याचार करता था, इन्हीं अत्याचारों के कारण मुगलवंश का पतन हुआ, उसने हिन्दुओं पर जजिया तथा तीर्थ यात्रा कर लगा दिए। उनके हिन्दू मंदिरों को तोड़ा गया तथा साम्राज्य में ऊँचे पदों से हिन्दुओं को निष्कासित कर दिया गया।

(ii) शियाओं पर अत्याचार :-

मुसलमान होने के कारण औरंगजेब ने हिन्दुओं की तरह शियाओं पर भी अत्याचार किए, उनसे

नौरोज, मुहर्रम पर ताजिए निकालना तथा अन्य शिया प्रथाओं को बन्द कर दिया, उनके शिक्षा केन्द्रों स्कूलों तथा धार्मिक प्रणालियों को नष्ट करवा दिया। शिया लोग फारसी विद्वान् अच्छे सैनिक कुशल अर्थशास्त्री एवं कुशल प्रबंधक होते थे जिन्होंने प्रशासन को सुचारु बनाने में औरंगजेब के पूर्वजों की काफी मदद की थी परंतु औरंगजेब ने उन्हें सरकारी नौकरियों पर से हटा दिया। इस प्रकार औरंगजेब के अत्याचारों के कारण मध्य एशिया से शियाओं ने आना बंद कर दिया तथा परिणामस्वरूप प्रशासन में ह्रास होने लगा।

(iii) अविवेकपूर्ण दक्षिण नीति :-

दक्षिण औरंगजेब की कब्र साबित हुआ तथा उसने मुगल साम्राज्य के पतन का मार्ग प्रशस्त कर दिया, दक्षिण के शिया राज्यों तथा बीजापुर तथा गोलकुण्डा को नष्ट करने के लिए तथा मराठों से निपटने के उद्देश्य से औरंगजेब उस विनाशकारी लड़ाई में उलझ गया जो उसके जीवन में कभी

समाप्त हो सकी औरंगजेब के जीवन के वर्ष इसे राज्यों से लड़ाई 25 में व्यतीत हुए। जिसमें मुगल राज्य के सबसे योग्य सिपाही तथा सेनापति मारे गए तथा मुगलों की प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल गई।

(iv) <u>सन्देहशील स्वभाव</u> :- औरंगजेब किसी पर विश्वास नहीं करते थे उसने अपने पुत्रों व सरदारों पर विश्वास नहीं किया तथा सभी शक्तियाँ अपने पास रखीं। इस प्रकार मुगल उत्तराधिकारियों तथा पदाधिकारियों को अपनी योग्यता के प्रदर्शन का अवसर ही नहीं मिल पाया। उसने अपने पुत्रों को इस योग्य नहीं होने दिया कि वे सत्ता का सफलतापूर्वक संचालन कर सकें।

(v) <u>रिक्त राज कोष</u> :- औरंगजेब के उत्तर तथा दक्षिणी भारत के लगातार सैनिक अभियानों के कारण उत्पन्न राजनीतिक अव्यवस्था एवं अराजकता ने राज्य की अर्थव्यवस्था को खराब कर दिया सरकारी कर्मचारियों, जागीरदारों। तथा जमींदारों सभी ने मिलकर किसान का शोषण किया। परिणामस्वरूप कृषि की दशा बिगड़ गयी, इससे रुष्ट किसानों ने देश के विभिन्न भागों में बड़ी संख्या में विद्रोह में भाग लेकर राज्य को अस्थिर कर दिया।

<u>Ques 3.</u> प्लासी के युद्ध के कारण व घटनाएँ का वर्णन कीजिए ?

<u>प्लासी का युद्ध</u> (23 जून 1757 ई०)

इस युद्ध से ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा बंगाल को अपने अधीन करने की प्रक्रिया का आरंभ माना जाता है। इस युद्ध के लिए अब क्लाइव ने षड्यंत्र व युद्ध के बहाने तलाश करने आरम्भ किए। इस युद्ध के प्रमुख कारण इस प्रकार हैं :-

<u>कारण</u> :- मुगल शासक औरंगजेब की 1707 ई० में मृत्यु के बाद भारत में अराजकता फैली, इसी स्थिति स्थिति का लाभ उठाते हुए बंगाल के सूबेदार अलीवर्दी खां

मुगल - सम्राट मुहम्मदशाह रंगीला के समय ई० में शासक बना, ई० 1741 में इसकी मृत्यु के 1756 बाद इसका दौहित्र सिराजुद्दौला बंगाल का नवाब बना इसके समय में ऐसी घटनाएँ घटीं जिससे अंग्रेजों ने इसे अपना शत्रु मान लिया।

1. उत्तराधिकार संबंधी षड्यन्त्र :-

1) अलीवर्दी खां के कोई पुत्र न था, 3 पुत्रियाँ थीं, इन पुत्रियों का विवाह अपने तीनों भतीजों जो ढाका, पूर्णिया व पटना के शासक थे से किया इसने अपने जीवनकाल में अपना उत्तराधिकारी अपनी सबसे छोटी पुत्री का लड़का सिराजुद्दौला को गोद लेकर घोषित कर दिया। सिराजुद्दौला के उत्तराधिकारी के रूप में अलीवर्दी खां की बड़ी बेटी घसीटी बेगम व अन्य दौहित्र शौकत जंग ने मानने से इंकार कर दिया।

2. सिराजुद्दौला के दरबार में - जगत सेठ, अमीचन्द राजवल्लभ राय दुर्लभ तथा मीर कासीम जाफर आदि अन्य लोगों का एक शक्तिशाली गुट था जिसका लाभ अंग्रेजों ने उठाया।

व प्लासी के युद्ध का कारण बना।

3. नवाब ने एक सेनापति मीर जाफर ने षड्यन्त्र के अन्तर्गत क्लाइव को पत्र द्वारा सिराजुद्दौला पर आक्रमण करने का न्यौता दिया और प्लासी के दोनों युद्धों में अंग्रेजों का साथ दिया।

4. विश्वघाती, राय दुर्लभ राय या दुर्लभ राय ने नवाब के विरुद्ध षड्यन्त्र के अन्तर्गत समय पर सहायता नहीं की, क्योंकि अंग्रेजों ने इसे व इसके पुत्र कृष्ण वल्लभ को कलकत्ता में शरण दी थी।

5. नवाब की आज्ञा के बिना अंग्रेजों द्वारा कलकत्ता की किलेबन्दी करना।

6. नवाब द्वारा कासिम बाजार की कोठी पर 4 जून, 1756 ई० में को अधिकार करना।

7. नवाब द्वारा जून 20 1756 ई० को कलकत्ता की कोठी व फोर्ट विलियम पर अधिकार करना।

8. ब्लैक होल या काल कोठरी की दुर्घटना भी नवाब व अंग्रेजों के सम्बंध बिगाड़ने में सहायक रही।

9. फ्रांसीसियों पर विजय करना - क्लाइव को संदेह था कि कहीं नवाब फ्रांसीसियों से न मिल जाए, अतः मार्च 1757 ई० में क्लाइव ने चन्द्रनगर पर आक्रमण किया व जीत लिया।

10. तात्कालिक कारण - क्लाइव ने नवाब पर अलीनगर की संधि को पूरा न करने का आरोप लगाया।

घटनाएँ :
12 जून, 1757 ई० को क्लाइव ने सेना सहित मुर्शिदाबाद की ओर कूच किया जो 23 जून, 1757 ई० को मुर्शिदाबाद के दक्षिण में 22 मील दूर प्लासी गाँव नामक स्थान पर नवाब की सेना के आमने-सामने खड़ी।
नवाब की सेना में लगभग 50,000 सैनिक थे जिसका नेतृत्व विश्वासघाती सेनापति मीरजाफर ने किया, युद्ध आरम्भ हुआ इसमें मीरजाफर व रायदुर्लभ ने नेतृत्व वाली नवाब की अधिकांश सेना ने युद्ध में भाग नहीं लिया नवाब की अग्रिम टुकड़ी ने नेता मीर मदान व मोहन लाल की बहादुरी व वफादारी भी युद्धक्षेत्र में काम न आ सकी अतः नवाब को युद्ध क्षेत्र से भागना पड़ा ऐसा होने पर इसकी सेना भी तितर-बितर हो गई, नवाब को मुर्शिदाबाद में बन्दी बना लिया गया तत्पश्चात मीरजाफर के पुत्र मीरन के आदेश से इसका वध कर दिया गया, इस प्रकार अलीवर्दी खां के वंश का अन्त हुआ।

Ques-4. 1857 की क्रांति के कारण, परिणाम और स्वरूप संक्षिप्त वर्णन किया कीजिए?

1857 की क्रांति

गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग के शासन काल में घटित होने वाली 1857 ई० की क्रान्ति भारतीय इतिहास की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना है, इस घटना पर जितना साहित्य लिखा गया है, शायद उतना भारत के इतिहास की किसी अन्य घटना पर नहीं लिखा गया होगा इस घटना को भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम, 'महान क्रांति, सैनिक विद्रोह एवं हिंदू मुस्लिम संगठित षड्यंत्र आदि नामों से जाना जाता है।

क्रांति के कारण

अनेक अंग्रेज लेखकों ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि एक विशाल भू-क्षेत्र में फैली इस क्रांति का मूल कारण भारत सरकार की नीतियों में मूलभूत कमियां नहीं थीं अपितु

यह क्रान्ति शासन में कुछ त्रुटियों के परिणामस्वरूप हुई, जिन्हें दूर करने से साम्राज्य की जड़ें काफी मजबूत हो सकती थीं इसलिए उन्होंने इसे एक सैनिक विद्रोह कहा है, इस क्रांति के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे।

A. राजनीतिक कारण :-

1. अंग्रेज प्रशासकों की साम्राज्यवादी नीति :- ब्रिटिश प्रशासकों की साम्राज्यवादी नीति ने 1857 ई० क्रांति की आधारभूमि तैयार की। 1757 ई० से 1856 ई० तक के अधिकांश ब्रिटिश गवर्नर जनरलों ने साम्राज्यवादी नीति का अनुसरण किया, रॉबर्ट क्लाइव, वारेन हेस्टिंग्ज, लार्ड वेलेजली, विलियम बेंटिंक तथा डलहौजी जैसे अंग्रेज प्रशासकों ने छल एवं बल से अनेक भारतीय रियासतों को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।

2. लार्ड डलहौजी के लैप्स की नीति :- लार्ड डलहौजी एक महत्वाकांक्षी एवं साम्राज्यवादी व्यक्ति था वह अधिक से अधिक भारतीय रियासतों को जीतकर ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था। इसके लिए उसने एक नीति ढूँढ निकाली जिसे 'गोद निषेध सिद्धान्त' या 'लैप्स की नीति' कहा जाता है। इस नीति के अनुसार कोई भी भारतीय राजा निःसंतान होने पर किसी को गोद नहीं ले सकता था तथा उसके निः संतान मरने पर उसका राज्य ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया जाता था।

3. अवध का अंग्रेजी राज्य में विलय :- लार्ड डलहौजी ने अवध के नवाब वाजिद अली शाह पर कुप्रशासन का आरोप लगाकर 12 लाख रुपये वार्षिक पेंशन दे दी और नवाब को कलकत्ता भेजकर अवध को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया। विद्वानों की मान्यता है कि अवध से अधिक अंग्रेजों का समर्थक एवं आज्ञाकारी राज्य अन्य कोई नहीं था इस प्रकार जब अवध जैसे वफादार राज्य को ब्रिटिश राज्य में मिला लिया तो शेष राज्यों का अस्तित्व कभी भी समाप्त किया जा सकता है।

4. **पेन्शनों एवं उपाधियों की समाप्ति :-** लार्ड डलहौजी ने भारतीय शासकों तथा नवाबों को पूर्णत: शक्तिहीन कर देने के उद्देश्य से संबंधित शासकों की मृत्यु के पश्चात उनके उत्तराधिकारी को इन उपाधियों एवं पेन्शनों से मुक्त कर दिया कर्नाटक एवं तंजौर के शासकों को उपाधियां तथा पेन्शनों से मुक्त कर दिया कर्नाटक एवं तंजौर के शासकों की उपाधियां तथा पेन्शनों को समाप्त कर दी गई।

5. **बेरोजगार सैनिक :-** अंग्रेजों ने अनेक भारतीय राज्यों को अंग्रेजी साम्राज्य में मिलाने के बाद उनकी सेनाओं को भंग कर दिया परिणामस्वरूप संबंधित राज्यों के हजारों सैनिक बेरोजगार हो गये। उनके पास अपनी जीविका चलाने का कोई साधन नहीं बचा। अकेले अवध की सेना के 45,000 सिपाहियों में से केवल 15,000 सैनिकों को रखा गया तथा शेष को बर्खास्त कर दिया गया, अन्य राज्यों के सैनिकों की संख्या भी काफी थी।

प्रशासनिक कारण

1. **भारतीयों को उच्च पदों से वंचित करना :-** अंग्रेजों ने आरंभ से ही प्रशासन में भेदभाव की नीति अपनाई लार्ड कार्नवालिस ने सभी भारतीयों को अविश्वास की दृष्टि से देखा तथा उसने भारतीयों को उच्च पदों से वंचित कर दिया यद्यपि ई० के चार्टर एक्ट 1833 में जाति एवं रंगभेद नीति समाप्त कर कम्पनी की सेवाओं में भारतीयों को लेने की घोषणा की गई, परन्तु एक्ट की यह धारा कभी भी क्रियान्वित नहीं की गई।

2. **दूषित न्याय व्यवस्था :-** भारतीय अंग्रेजी न्याय से भी सन्तुष्ट नहीं थे वे उसको बहुत खर्चीला समझते थे उसमें मुकदमों का निर्णय भी देरी से होता था, धनी लोग रुपया खर्च करके निर्णय अपने पक्ष में करवा लेते थे जमींदारों के कहने से निर्धन किसानों पर मुकदमे चलाये जाते थे।

3. भारतीयों को प्रशासन तन्त्र में स्थान न देना :-

1860 ई० में सर सैयद अहमद खाँ ने भारतीयों के बारे में कहा था कि "विद्रोह का सबसे महत्वपूर्ण कारण भारतीयों को विधान सभा तथा सरकार के प्रशासन तन्त्र में प्रविष्ट न होने देना है। जिसके कारण शासन को समय से भारतीय समस्याओं की जानकारी न हो पाती" भारत के लिए कानून बनाने वाली संस्थाओं का एक भी सदस्य भारतीय नहीं था।

4. अंग्रेज अधिकारियों का दुर्व्यवहार :-

कम्पनी के शासन काल में प्रशासन में शक्तिशाली ब्रिटिश अधिकारी वर्ग का विकास हुआ था। यह अधिकारी वर्ग अपने आप को भारतीय कर्मचारियों से पूरी तरह अलग रखता था तथा हर प्रकार से उन्हें अपमानित करता था। भारतीय कर्मचारियों के साथ उनका व्यवहार कुत्तों से भी बदतर था।

1. भारत का आर्थिक शोषण :-

अंग्रेजों ने भारतीयों का जितना राजनीतिक शोषण किया, उससे भी बढ़कर आर्थिक शोषण किया। कम्पनी सरकार की आर्थिक नीतियों का निर्धारण राजनेताओं द्वारा नहीं अपितु तात्कालीन ब्रिटिश अधिकारी एवं व्यापारियों द्वारा होता था। 1813 ई० के चार्टर एक्ट द्वारा ब्रिटेन के निजी व्यापारियों को भारत में व्यापार करने की अनुमति मिल जाने से आर्थिक शोषण की दर और तेज हो गई।

2. भूमि पर दबाव :-

भारतीय उद्योग, व्यापार एवं वाणिज्य पर आधिपत्य स्थापित होने के कारण भारतीय लघु उद्योग का पतन हो गया तथा सैकड़ों शिल्पकार बेरोजगार हो गए। इस बाध्यकारी व्यवस्था के कारण बहुत से हस्तकार खेती करने के लिए बाध्य हुए, जनसंख्या के दबाव के कारण भूमि का बंटवारा हो गया जिससे उत्पादन में कमी आई व जिसका परिणाम अकालों के रूप में सामने आया।

3. **भूराजस्व में वृद्धि :-**
बंगाल में कंपनी के शासन की स्थापना के पश्चात कंपनी ने सबसे पहले भूराजस्व में वृद्धि की तरफ ध्यान दिया। कंपनी को नवीन प्रदेशों को जीतने तथा जीते हुए प्रदेशों में शान्ति एवं व्यवस्था स्थापित करने के लिए धन की आवश्यकता थी तथा धन प्राप्त करने का सबसे अच्छा साधन भूराजस्व था लगान न देने वाले किसानों की जमीनें नीलाम कर दी जाती थीं। ई० में 1853 उत्तरी पश्चिमी प्रान्त में एकड़ भूमि की बोली 1,10,000 लगाई गई।

4. **बेरोजगारी एवं गरीबी :-**
अंग्रेजी सरकार की नीतियों के कारण उद्योग एवं व्यापार नष्ट हो जाने से कारीगर बेकार हो गये थे अतः वे कृषि की तरफ निर्भर होने का प्रयास करने लगे परन्तु जमीन संबंधी व्यवस्था व भूमि का अपहरण करने से खेतिहर मजदूर बेकार हो गये थे, देशी राज्यों का अंग्रेजी राज्य में विलय कर देने से हजारों सैनिक बेकार हो गये थे।

सामाजिक एवं धार्मिक कारण

1. **उच्च वर्ग की उपेक्षा :-**
देशी राज्यों के विनाश तथा कम्पनी के राज्य विस्तार के साथ एक शक्तिशाली ब्रिटिश अधिकारी वर्ग का जन्म हुआ। भारतीय समाज पर इसका इसका बुरा प्रभाव पड़ा, भारतीय सामाजिक जीवन इससे अस्त-व्यस्त हो गया इस प्रकार भारतीय उच्च वर्ग की उपेक्षा की गई।

2. **भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार :-**
अंग्रेज अधिकारी एवं कर्मचारी अपने आप को भारतीयों से श्रेष्ठ समझते थे तथा भारतीयों को अशिक्षित, असभ्य एवं असंस्कृत समझा जाता था सामान्य भारतीयों के साथ पशुओं के समान व्यवहार होता था। भारतीयों का अंग्रेजों के क्लबों व पार्कों में जाना निषेध था वे प्रथम श्रेणी के डिब्बे में भी यात्रा नहीं कर सकते थे उन्हें ऊँचे पदों पर भी नियुक्त नहीं किया जाता था।

Date: / /
Page No.

3. भारतीय ~~सामाजि~~ सामाजिक आचार - व्यवहार में हस्तक्षेप:-

लार्ड बिलियम बैंटिक तथा लार्ड डलहौजी जैसे गवर्नर जनरलों के काम में हिंदू समाज में व्याप्त व्यापक बुराइयों को दूर करने के लिए कुछ कानून बनाये गये, सतीप्रथा, कन्यावध, नर बलि, बाल विवाह को निषेध किया गया। डलहौजी ने 1856 ई० के एक कानून द्वारा विधवा विवाह को मान्यता प्रदान की यद्यपि सुधार भारतीयों के हित में किये गये थे परन्तु रूढ़िवादी लोगों ने इनका विरोध किया तथा ब्रिटिश सरकार द्वारा इन्हें भारतीयों के सामाजिक जीवन में हस्तक्षेप समझा।

4. पश्चिमी शिक्षा का प्रसार:- भारतीय भाषाओं तथा साहित्य के प्रति ब्रिटिश प्रशासकों का दृष्टिकोण अच्छा नहीं था अतः उन्होंने 1835 ई० में भारत में अंग्रेजी को भाषा का माध्यम बनाकर पाश्चिमी साहित्य एवं ज्ञान - विज्ञान का प्रचार करना आरंभ कर दिया स्कूलों में ईसाई धर्म का प्रचार किया जाता था।

Date: / /
Page No.

5. ईसाई धर्म का प्रचार:- 1813 ई० के चार्टर एक्ट में धर्म प्रचार को भारत आने की अनुमति दी गई थी प्रारंभ में सरकार ने उन्हें खुले रूप में धर्मप्रचार की अनुमति नहीं दी परन्तु धीरे - धीरे अंग्रेजी सरकार यह सोचने लगी कि भारतीयों को सभ्य बनाना ही भी उसका उत्तरदायित्व है, अधिकतर अंग्रेजों के लिए सभ्यता फैलाने का अर्थ था कि ईसाई धर्म फैलाना, इसलिए सरकार ईसाई धर्म ~~का~~ प्रचारकों ~~कार्य~~ के लिए उदार नीति अपनाने लगी।

सैनिक कारण

1. भारतीय सैनिक के साथ भेदभाव:- अंग्रेज सेना में भर्ती भारतीय सन्तुष्ट नहीं थे अनेक मामलों में उनसे भेदभाव किया जाता था उन्हें अंग्रेज सैनिकों की तुलना में वेतन भत्ते एवं पदोन्नति बहुत कम मिलते थे एक साधारण भारतीय सैनिक को वेतन 7-8 रुपया मासिक होता था तथा इसी वेतन में से उसे खाने का खर्च एवं

वर्दी के पैसे देने पड़ते थे, अतः सेना में एक भारतीय सूबेदार का वेतन 35 रुपया मासिक जबकि अंग्रेज सूबेदार को 135 रुपया मिलता था।

भारतीय सैनिकों की अधिक संख्या :-

1856 ई० तथा में सेना में भारतीय सैनिकों अंग्रेज सैनिकों की संख्या में भारी असमानता थी। क्रीमिया 1854 ई० युद्ध में भाग लेने के लिए भारत में से यूरोपीय सेना वहाँ बुला ली गई थी। इससे भारत में अंग्रेजी सैनिकों की संख्या और भी कम हो गई थी।

अवध के सैनिकों में रोष :-

लार्ड डलहौजी के शासनकाल में 1856 ई० में अवध को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाये जाने के कारण सैनिकों की भावनाओं को गहरा आघात लगा था। बंगाल की सेना में अधिकांशतः अवध के सैनिक थे। उनमें वहीं देश प्रेम था जो अवध के लोगों में था।

4. **अंग्रेजों की सैनिक पराजय :-**

प्रारंभ में भारतीयों का विचार था कि अंग्रेजी सेना अजेय है परन्तु धीरे-धीरे कुछ घटनाओं से उनकी यह धारणा दृढ़ हुई कि अंग्रेज सेना को हराया जा सकता है। प्रथम अफगान युद्ध तथा दो बार सिक्ख सेनाओं से अंग्रेज सेनाओं को करारी हार मिली थी।

5. **तात्कालिक कारण - चर्बी वाले कारतूस :-**

भारतीयों में यह विश्वास दृढ़ होता जा रहा था कि अंग्रेज भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को नष्ट करना चाहते हैं। ठीक ऐसे वातावरण में चर्बी वाले कारतूसों की घटना हुई जिसने की घटना हुई जिसने भारतीय जनता के असन्तोष रूपी बारूद के ढेर में चिंगारी का काम किया व चारों तरफ क्रान्ति की लपटें उठ खड़ी हुई। 1856 ई० में सरकार ने सैनिकों को पुरानी बंदूकों के स्थान पर नई ईनफील्ड राइफल नामक बंदूकें दीं।

क्रान्ति के परिणाम

1. **कम्पनी के शासन का अंत :-** 1857 ई० की क्रान्ति का एक प्रमुख परिणाम कम्पनी के शासन का अन्त था। 2 अगस्त 1858 ई० को ब्रिटिश पार्लियामेंट ने एक ऐक्ट पास कर यह घोषणा की कि अब से भारतीय ब्रिटिश सम्राट के नाम से होगा।

2. **मुगल वंश का अंत :-** 1857 ई० क्रान्ति ने 1526 ई० में पानीपत के प्रथम युद्ध में मुगल सम्राट बाबर द्वारा स्थापित किये गए मुगल वंश का अन्त कर दिया। दिल्ली में मुगल सम्राट बहादुर शाह ने क्रान्तिकारियों को नेतृत्व प्रदान किया था।

3. **महारानी विक्टोरिया का घोषणा पत्र :-** 1857 ई० की क्रान्ति का शासन नीति पर भी प्रभाव पड़ा, क्रांति के तुरंत पश्चात 1 नवम्बर 1858 ई० को महारानी विक्टोरिया ने एक घोषणा पत्र निकाला जिसे लार्ड केनिंग ने इलाहाबाद के दरबार में पढ़कर सुनाया। इसकी प्रमुख बातें निम्नलिखित थी। (1) भविष्य में राज्य विस्तार नहीं किया जायेगा, (2) धार्मिक सहिष्णुता एवं स्वतन्त्रता की नीति का पालन किया जायेगा। (3) भारतीयों के साथ उदारता का व्यवहार किया जायेगा तथा उनके कल्याण के कार्य किये जायेंगे (4) प्राचीन रीति - रिवाजों आदि का संरक्षण किया जायेगा। (5) निष्पक्ष रूप से सभी भारतीयों को कानून का संरक्षण मिलेगा। (6) योग्यतानुसार बिना किसी पक्षपात के सभी को सरकारी नौकरियाँ दी जाएँगी।

4. **आर्थिक प्रभाव :-** क्रान्ति को दबाने के लिए कम्पनी की सरकार को भारी धनराशि खर्च करनी पड़ी थी जिससे कम्पनी पर 98 लाख पौंड का ऋण हो गया था। अतः आर्थिक संकट से निपटने के लिए वित्त व्यवस्था का पुनर्गठन किया गया, नवम्बर 1859 ई० में ट्रेजरी के अर्थ सचिव तक बोर्ड आफ ट्रेड के भूतपूर्व वाइस प्रेसीडेंट जेम्स विल्सन को गवर्नर जनरल की कौंसिल का अर्थ सदस्य बनाकर भारत भेजा गया,

देशी राज्यों के प्रति नई नीति :-

महारानी की घोषणा के पश्चात देशी राज्यों के प्रति नई नीति का पालन किया गया, अब देशी राज्यों के साथ अधीनस्थ अलगाव की नीति की जगह अधीनस्थ संघ की नीति का पालन किया गया, गोद प्रथा निषेध सिद्धान्त को समाप्त कर दिया गया।

भारत का स्वरूप

1857 की क्रांति के सम्बंध में इतिहासकारों में बड़ा मतभेद रहा है, इस घटना का इतिहास लेखन किस रूप में किया जाए, यह अभी तक चर्चा का विषय बना हुआ है, विद्वान 1857 की घटना को भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम मानते हैं,

1. सैनिक विद्रोह

अनेक यूरोपीय इतिहासकारों ने 1857 की क्रान्ति को केवल सैनिक विद्रोह बताया है,

1857 ई० का विद्रोह देशभक्ति की भावना रहित तथा स्वार्थी सैनिकों का विद्रोह था जिसका न तो कोई नेता था और न ही इसे जनता का समर्थन प्राप्त था, इसका मूल कारण चर्बी वाले कारतूस था,

पक्ष में मत :-

(i) यह विद्रोह केवल उत्तर भारत के ही कुछ क्षेत्रों में फैला था
(ii) इस विद्रोह का आरंभ ही सैनिक छावनी से हुआ था
(iii) जहाँ जहाँ सैनिक टुकड़ियाँ थी वहीं युद्ध हुआ था क्योंकि अधिकतर सैनिक उत्तर भारत में थे इसलिए यह उत्तर भारत में ही अधिक फैला।
(iv) इस विद्रोह में किसानों तथा अन्य भारतीयों ने बहुत कम लिया
(v) यह विद्रोह नगरों तक ही सीमित रहा इसकी लपटें गाँव में नहीं आई,

आलोचना तथा विरोधी मत :-

(i) यह सैनिक विद्रोह नहीं था क्योंकि इसमें सब सैनिकों ने भाग नहीं लिया था, सेना का एक भाग सरकार को वफादार था,

(ii) विद्रोह में बड़ी संख्या में आम आदमियों ने भाग लिया,

(iii) विद्रोह की असफलता के बाद जो मुकदमें चलायें गये उनमें सैनिकों के अतिरिक्त हजारों नागरिकों को दोषी करार देकर दण्ड दिए गए।

(iv) यह विद्रोह शीघ्र ही फैल गया था तथा इसने जन विद्रोह एवं भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का रूप धारण कर लिया था,।

2. प्रथम स्वतंत्रता संग्राम

भारतीय इतिहासकारों तथा विद्वानों ने 1857 ई० की क्रांति को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की संज्ञा दी है। को विद्रोह ब्रिटिश शासन के था 1857 विरुद्ध एक आयोजित हिन्दू मुस्लिम षड्यन्त्र था,।

इस मत के पक्ष में निम्न तर्क दिये गए:-

(i) इस क्रान्ति का सारे देश में फैल जाना ही यह सिद्ध करता है कि यह एक जन आन्दोलन था। जिसमें प्रत्येक वर्ग व जाति ने अपनी परंपराओं को बचाने के लिए अंग्रेजों को बहार निकालने के प्रयास किये थे,।

(ii) क्रान्ति बहुत शीघ्र आरंभ हो गई थी तथा कई महीनों तक चलती रही।

(iii) यदि यह केवल एक सैनिक विद्रोह होता न तो न केवल तो शीघ्र फैलता तथा न ही इतने लम्बे समय तक चलता,।

(iv) 1857 ई० क्रान्ति का कारण चर्बी वाले कारतूस नहीं थे अपितु यह पिछले 100 वर्षों के दौरान ईस्ट इंडिया कम्पनी के शोषण से उत्पन्न भारतीय असंतोष के कारण फूटा था।

(v) क्रान्तिकारियों के उद्देश्यों में समानता थी वह उद्देश्यों अंग्रेजी राज्य की समाप्ति तथा अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालना इसलिए सबने मिल कर 'फिरंगी को मारो' के नारे लगाये थे,।

(UNIT - II)

Ques-1. आर्यसमाज औष्लिक स्वामी दयानन्द पर नोट लिखो ?

जीवनवृत्त :-

स्वामी दयानन्द का जन्म ई० 1824 में गुजरात के मैरवी क्षेत्र के निकट टंकारा नामक स्थान पर हुआ था उनका बचपन का नाम मूल शंकर था, उनके पिता का नाम अम्बा शंकर था जब वे 14 वर्ष के थे तो पिता के साथ शिवरात्रि को शिव मन्दिर गए वहाँ उन्होंने देखा कि एक चूहा शिवलिंग पर चढ़कर प्रसाद खा रहा है तब उनका मन मूर्ति - पूजा से उखड़ गया।

उनके द्वारा लिखित ग्रन्थ :-

वास्तव में स्वामी जी ने तीन ग्रन्थ लिखे जो इस प्रकार हैं।

1) ऋग्वेदादि भाष्य नामक ग्रन्थ में उन्होंने वेदों के सम्बन्ध में विचार दिए

2) वेद भाष्य। में यजुर्वेद और ऋग्वेद के बारे में टीका लिखी।

3) उनकी प्रसिद्धि का आधार - स्तम्भ सत्यार्थ प्रकाश है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि वैदिक - धर्म ही सभी धर्मों से श्रेष्ठ है, इस ग्रन्थ में उन्होंने सभी धर्मों के अन्धविश्वासों व बाह्य आडम्बरों की आलोचना की है इससे हिन्दुओं को भी जानकारी मिल गई कि मुस्लिम व ईसाई धर्म में भी अनेक बुराइयाँ हैं अत: वे धर्म हिन्दु धर्म से। अच्छे नहीं हैं,

आर्यसमाज के सिद्धान्त :-

1) ईश्वर ही ज्ञान का कारण है सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है

2) ईश्वर सच्चिदानन्द, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनादि, अनंत, अजर, अमर, भय, नित्य पवित्र, सृष्टिकर्ता और निर्विकार है, हम सबको उसकी उपासना करनी चाहिए

3) वेद सब रूप विद्याओं की प्रस्तुति है। इसे इसलिए सब आर्यों का यह धर्म है कि वह सब वेद को पढ़ें एवं सुनें

4) सत्य को ग्रहण करने एवं असत्य को छोड़ने के लिए हमेशा तैयार

रहना चाहिए।

5) सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए।

6) अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

7) संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।

8) सब काम सत्य और असत्य पर विचार करके करने चाहिए।

आर्य समाज के सुधार :-

1) सामाजिक सुधार :-

स्वामी दयानन्द ने समाज के क्षेत्र में बहुत सुधार किए जैसे कि उन्होंने बाल - विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा, जाति - प्रथा आदि का घोर विरोध और विधवा - विवाह, स्त्री - शिक्षा आदि का समर्थन किया। उन्होंने लड़कों के लिए 25 वर्ष और लड़कियों के लिए 16 की विवाह की आयु निर्धारित की।

2) शुद्धि आन्दोलन :-

स्वामी जी ने शुद्धि आन्दोलन चलाया जिसमें धन या बलपूर्वक हिन्दुओं को मुस्लिम या ईसाई बनाया गया था, उनको पुनः हिन्दू धर्म ग्रहण करवा दिया जाता था। इस आन्दोलन ने हिंदू समाज को इस्लाम और ईसाई धर्म के आक्रमण से रक्षा की।

3) धार्मिक क्षेत्र में सुधार :-

स्वामी जी ने हिन्दू धर्म में फैली मूर्ति - पूजा, बलि प्रथा, अनेक मत - मतान्तरों, अवतारवाद और अन्धविश्वासों का विरोध किया तथा यज्ञ, हवन और मन्त्रपाठ आदि का समर्थन किया, उनके अनुसार हर व्यक्ति सत्य कर्म, ईश्वर की उपासना करते हुए मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

4) साहित्यिक व शैक्षणिक सुधार :-

इस क्षेत्र में भी स्वामी जी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने अनेक ग्रन्थ हिंदी भाषा में लिखकर हिंदी के गौरव को भी बढ़ाया। वे स्त्री - शिक्षा के समर्थक थे, और उन्हीं के कारण संस्कृत का महत्व पुनः स्थापित हो सका था। वे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के समर्थक थे ताकि शिक्षा के साथ - साथ ब्रह्मचर्य धर्म का भी पालन हो सके।

Ques.2. राजा राममोहन व ब्रह्मसमाज पर एक निबन्ध लिखिए ?

राजा राममोहन राय :-

राजा राममोहन राय पहले भारतीय थे जिन्होंने सुधारवादी आन्दोलन की नींव डाली उनको नवजागरण का अग्रदूत नवीन युग का प्रवर्तक, भारतीय राष्ट्रीयता के देवदूत और आधुनिक भारत के निर्माता जैसे नामों से भी पुकारा जाता है। उनका जन्म मई ई० को बंगाल के वर्धमान जिले 1774 के राधानगर गाँव में हुआ वे एक ब्राह्मण परिवार में पैदा हुआ हुए। उनकी आरम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई जहाँ उन्होंने अरबी, फारसी, संस्कृत, लैटिन व ग्रीक आदि भाषाओं का अध्ययन किया। वे मूर्ति-पूजा के सख्त विरोधी थे हालाँकि उनके पिता मूर्ति-पूजा के समर्थक थे, इस कारण राम मोहन राय ने घर छोड़ दिया, उन्होंने समस्त भारत की यात्रा की, वे अंग्रेजी शिक्षा से काफी प्रभावित थे 1830 में वे इंग्लैण्ड गए थे जहाँ 27 सितम्बर, 1833 ई० में उनका देहान्त हो गया।

राजा राममोहन राय के द्वारा किए गए सुधार :-

1) **धार्मिक सुधार :-**

राममोहन राय सभी धर्मों का अध्ययन करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सभी धर्मों में सत्यता है और ईश्वर एक है इसलिए जिन पाखंडों ने विभिन्न धर्मों में प्रवेश कर लिया है उनको दूर करना बहुत जरूरी है उन्होंने कर्मकाण्ड, जाति-प्रथा, मूर्ति-पूजा आदि का खण्डन किया है।

2) **सामाजिक सुधार :-**

उन्होंने समाज में फैली जाति-प्रथा, पर्दा प्रथा, छुआछूत, बाल-विवाह, बहु-विवाह, सती-प्रथा, बाल-हत्या आदि का सख्त विरोध किया और स्त्री-शिक्षा, विधवा विवाह तथा अन्तर्जातीय विवाह का समर्थन किया जब उन्होंने अपनी भाभी को सती होते देखा तो इस प्रथा के खिलाफ भयंकर आन्दोलन छेड दिया उन्होंने स्त्रियों की दशा सुधारने के लिए अनेक प्रयास किए वे औरतों को पुरुषों के समान अधिकार दिलवाना चाहते थे, इस प्रकार समाज की प्रत्येक बुराई को दूर करने का प्रयास किया है।

3) राष्ट्रीय सुधार :- उन्होंने हिन्दू कानून में सुधार करने की माँग की स्त्री सम्पत्ति के अधिकार की बकालत की प्रेस पर लगे प्रतिबन्ध को विरोध किया, दमनकारी कृषि कानूनों अवगत करवाया तथा को अंग्रेज सरकार से प्रार्थना की कि सरकारी नौकरियाँ व सेना में ज्यादा - से - ज्यादा भारतीय भर्ती किए जाएँ, वे न्याय में जूरी प्रथा के समर्थक थे।

4) शैक्षणिक सुधार :- वे पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित व्यक्ति थे और उनकी शिक्षा के समर्थक भी। उनका विचार था कि अंग्रेजी शिक्षा से भारतीयों का विकास हो सकता है इसलिए उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा पर बल दिया ताकि विश्व की अनेक सान - विज्ञान की किताबों का अध्ययन भारतीय जनता कर सके। उनके कारण ही कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना हुई, उन्होंने इस भ्रम का भी निवारण किया कि अंग्रेजी पढ़कर लोग ईसाई बन जाते हैं।

5) साहित्यिक सुधार :- साहित्य में सुधार करने वालों में उनका नाम बहुत ही आदर से लिया जाता है, उन्होंने बंगला, उर्दू, फारसी व संस्कृत आदि की कई पुस्तकें लिखीं। 1815 में उन्होंने ब्रह्मसूत्र का बंगला में अनुवाद किया, उन्होंने कई उपनिषदों का भी अनुवाद किया, वे प्रेस की स्वतन्त्रता के समर्थक थे।

ब्रह्मसमाज

19 वीं सदी में प्रथम सामाजिक तथा धर्म सुधार आन्दोलन राजा राम-मोहन राय के नेतृत्व में आरम्भ हुआ उन्होंने ही ब्रह्मसमाज की स्थापना की थी, यह आन्दोलन यूरोप की संस्कृति तथा धर्म से प्रभावित हिंदू धर्म का एक नया रूप था।

ब्रह्मसमाज के सिद्धान्त :-

1) इसमें मूर्ति - पूजा का विरोध किया गया था,

2) इसका अवतारवाद में विश्वास नहीं था
3) इसमें मंदिर तीर्थ के लिए कोई जगह नहीं थी।
4) वे एकेश्वरवाद में विश्वास रखते थे
5) वे विश्वबन्धुत्व के सिद्धान्त में विश्वास रखते थे।

देवेन्द्रनाथ टैगोर और ब्रह्मसमाज :-

आदि ब्रह्मसमाज के संस्थापक देवेन्द्रनाथ टैगोर थे। 1842 में वे ब्रह्मसमाज के सदस्य बने। आरम्भ में ब्रह्मसमाज वेदों व उपनिषदों पर आधारित था लेकिन बाद में इसके अनुयायियों में मतभेद हो गया कि वेद वास्तव में प्रमाणिक है या नहीं। इस समाज के कुछ सदस्य विचार तत्व को महत्व देने लगे।

केशवचन्द्र सेन व ब्रह्मसमाज :-

केशवचन्द्र 1857 में ब्रह्मसमाज के सदस्य बने थे जो पाश्चात्य विचारधारा वाले व्यक्ति थे इसलिए उनका देवेन्द्रनाथ ठाकुर से मतभेद हो गया जो कि भारतीय संस्कृति के पक्षधर थे उन्होंने 1868 में भारतीय ब्रह्मसमाज की स्थापना की।

केशवचन्द्र सेन के धार्मिक विचार :-

सेन वास्तव में पाश्चात्य विचारधारा से प्रभावित आदमी थे इसी कारण ब्रह्मसमाज काफी दूर तक फैल गया और उसका झुकाव ईसाई धर्म की ओर बढ़ता गया। इसके अनुयायी ईसा मसीह की पूजा करने लगे और बाइबल आदि का अध्ययन करने लगे।

सामाजिक विचार :-

सेन वास्तव में एक क्रांतिकारी विचारक थे जिन्होंने हमेशा ही बाल-विवाह, सती प्रथा, दहेज प्रथा आदि का विरोध किया और स्त्री-शिक्षा, विधवा विवाह का समर्थन किया। उनके प्रयासों द्वारा ही सरकार ने 1872 में अन्तर्जातीय विवाह कानून बनाया और लड़के की आयु 18 वर्ष और लड़की की 14 वर्ष निर्धारित कर दी।

साधारण ब्रह्मसमाज :-

केशवचन्द्र सेन से मतभेद हो जाने पर आनन्द

मोहन बोस, शिवनाथ शास्त्री तथा विजय कृष्ण गोस्वामी ने मिलकर साधारण ब्रह्मसमाज की स्थापना की जिन्होंने धर्म और समाज - सुधार में महत्वपूर्ण योगदान दिया, इन्होंने 1848 ब्रह्म बालिका नामक स्कूल खोला, यह वास्तव में भारत का प्रथम धर्म व समाज सुधार आंदोलन था,

Ques3- ब्रिटिश काल में भारतीय अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़े?

ब्रिटिश काल में भारतीय अर्थव्यवस्था पर निम्न प्रभाव पड़े,

1) बैंक व्यवस्था :-
हिंदुस्तान की आर्थिक दशा में बैंक व्यवस्था तथा भुगतान के विविध साधन महत्वपूर्ण थे, इरफान हबीब के अनुसार मुगल काल में न केवल बैंक व्यवस्था विकसित हो चुकी थी बल्कि मंडियों में वाणिज्य - पत्र तथा बीमा - व्यवस्था भी प्रचलित होने लगी थी 18 वीं शताब्दी तक इनका प्रयोग और भी ज्यादा बढ़ गया था इसका संकेत यूरोपीय कंपनियों की वाणिज्यिक गतिविधियों से स्पष्ट हो जाता है,

2) वितरण प्रणाली :-
यद्यपि इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत की राजनैतिक और सैन्य शक्ति वास्तविक रूप से कृषि - राजस्व पर टिकी हुई थी लेकिन सरकार के समुद्री तट या आंतरिक व्यापार से प्राप्त चुंगीकर के महत्व को नकारा नहीं जा सकता, जिसके अनेक प्रमाण मिलते हैं, बालासोर व सूरत आदि बंदरगाहों पर जिस परिश्रम व मेहनत से शाही अधिकारी आयात - निर्यात के आँकड़े लिखते थे, उससे स्थिती स्पष्ट होती है कि व्यापार का अपना एक स्थान था,

3) कृषि व्यवस्था :-
भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि महत्वपूर्ण स्थान रखती है वास्तव में यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार था भौगोलिक स्थिति तथा प्राकृतिक तत्वों ने भारत को एक कृषि प्रधान देश बना रही दिया था समाज के ज्यादातर वर्ग कृषि पर निर्भर रहते थे, 18 वीं सदी की कृषि - व्यवस्था लगभग पिछली शताब्दी में एक समान थी,

4) आन्तरिक व्यापार :-

भारत का शहरी उत्पाद काफी विस्तृत था शहरी उद्योगों की वस्तुओं की माँग काफी ज्यादा थी जो विदेशी आंतरिक आबादी के कारण बनी थी उत्तर के अधिकांश शहर किसी न किसी उद्योग के साथ जुड़े हुए थे पश्चिमी भारत में कई शहरी उद्योग विकसित थे, इनमें प्रमुख उद्योग कपड़े व रेशम की बुनाई के थे, जिनके लिए औरंगाबाद मुसलीपत्तनम इत्यादि प्रसिद्ध थे, मुसलीपत्तनम कालीन की बुनाई का मुख्य केन्द्र था,

5) विदेशी व्यापार :-

हिन्दुस्तान में यूरोपीय व्यापार का जो भी स्थान रहा हो, भारत के विदेशी व्यापार की दिशा और स्वरुप को बदलने में वह महत्वपूर्ण तत्व था, उसके प्रभाव से भारत के वाणिज्य - स क्षेत्रों का महत्व भौगोलिक स्थिति के आधार पर बढ़ने या घटने लगा, 18वीं सदी के मध्य तक जहाँ गुजरात का व्यापारिक पतन हुआ, वहाँ बंगाल का महत्व विश्वव्यापी बढ़ गया,

निष्कर्ष :-

औरंगजेब के काल में और उसकी मृत्यु के बाद देश की आर्थिक दशा बिगड़ गई राजनीतिक शक्ति और सुव्यवस्था के अभाव के कारण व्यापार और वाणिज्य की हानि हुई, इस काल का समाज सामन्ती स्वरुप वाला था, केन्द्रीय राजसत्ता का इस समय पूरी तरह से अभाव था,

Ques4. सामाजिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़े?

अंग्रेजी शासन के भारतीय समाज पर निम्न प्रभाव पड़े :-

1. पुरानी संस्कृति का विनाश :-

अंग्रेजों द्वारा भारत का हर क्षेत्र में पाश्चिमीकरण करने का प्रयत्न किया गया जिसका परिणाम भारतीय पुरानी सभ्यता तथा संस्कृति के विनाश के रुप में निकला, अंग्रेजों ने भारत की प्राचीन सभ्यता तथा संस्कृति की कड़ी आलोचना की, भारतीय इतिहास को उन्होंने भारतीयों के समक्ष तोड़ - मरोड़ कर तथा गलत ढंग से प्रस्तुत किया, भारतीय अपने प्राचीन वैभव को भूल गए,

2) भारतीय मध्यम वर्ग का उदय :-

अंग्रेजी राज्य की स्थापना के परिणामस्वरूप ही भारत में मध्यम वर्ग का उदय हुआ, जिसने आगे चलकर भारत की राजनीतिक का नेतृत्व किया। अंग्रेजों ने भारत में इस प्रकार की व्यापारिक नीति को अपनाया जिसके परिणामस्वरूप इस मध्यम वर्ग का विकास हुआ। ब्रिटिश शासन द्वारा अपनाई गई जाने वाली भूमिकर व्यवस्था भी इसी प्रकार की थी। इस व्यवस्था में किसान निर्धन होते गए तथा उनकी भूमियाँ बिकने लगी।

3) सांस्कृतिक पुनर्जागरण :-

ब्रिटिशों ने भारत में पाश्चिमी सभ्यता का प्रचार करना शुरु किया तथा परिणामस्वरूप भारतीय पाश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगने आरम्भ हो गए। वास्तव में पाश्चिमी सभ्यता के प्रसार की इस सफलता का कारण भारतीय प्राचीन संस्कृति में आ चुकी बहुत-सी बुराइयाँ थीं। इन बुराइयों के कारण स्वयं भारतीयों का अपनी संस्कृति पर से विश्वास उठ गया था, तथा इसलिए उनको पाश्चिमी सभ्यता तथा संस्कृति बहुत आकर्षक दिखाई देती थी।

4) लोगों में दास्तव की भावना :-

अंग्रेजों की नीतियाँ भी कुछ ऐसी थीं कि उन्होंने भारतीयों को तन और मन दोनों प्रकार से ही गुलाम बनाकर रखा। इसमें कोई शक नहीं कि पश्चिमी देश भारत से विज्ञान तथा आधुनिकता में उस समय कहीं आगे था, परन्तु अंग्रेजों ने भारतीयों को इस आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से परिचित नहीं होने दिया। भारतीयों को हर क्षेत्र में पिछड़ा हुआ रहने दिया।

5) अनैतिकता का प्रसार :-

ब्रिटिश शासन का एक अन्य प्रभाव जिसके कारण वह भारतीयों के क्रोध तथा घृणा का पात्र बना, अनैतिकता का प्रसार था। अनैतिकता की यह गतिविधियाँ अधिकतर तथा विशेष रूप से ब्रिटिश सेना में फैली हुई थीं। यह सैनिक वेश्यावृत्ति के बहुत शौकिन थे तथा

इनका यह शौक पूरा करने के लिए सरकारी आदेश जारी किए जाते थे कि सैनिकों के लिए पर्याप्त सुंदर स्त्रियों का प्रबन्ध किया जाए।

6) विधवा विवाह :-

हिंदू समाज में विधवाओं की दशा काफी खराब थी, जो स्त्री विधवा हो जाती थी, हिंदू समाज में उसका पुनः विवाह नहीं हो सकता था, उसके लिए सती होना या पूरे जीवन दुःख दुख में कटना दो ही मार्ग होते थे, इस कारण ही समय - समय पर विधवा विवाह करने के पक्ष में भारतीय समाज सुधारकों ने प्रयास किए।

7. पर्दा - प्रथा का अंत :-

भारत में मुस्लिम आक्रमण के पश्चात पर्दा प्रथा का प्रचलन हुआ, तो मुस्लिम स्त्रियों में पर्दा - प्रथा का प्रचलन पूर्णतया था हिंदुओं में भी उसका प्रसार धीरे - धीरे हुआ, उस प्रथा ने स्त्रियों की दशा को अत्यंत शोचनीय बना दिया,

(UNIT - III)

Ques 1. 19 वीं शताब्दी में राष्ट्रवाद के उदय चेतना और विकास का वर्णन कीजिए?

राष्ट्रीय चेतना का उदय तथा विकास आधुनिक भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण तथा मनोरंजक घटना मानी जाती है। अनेक कारणों ने मिलकर राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न की, इन कारणों का विवरण इस प्रकार है -

1. विदेशी शासन के प्रभाव :-

अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भी भारत में अनेक विदेशी जातियों ने अपने साम्राज्य स्थापित किए थे परन्तु वे सभी घुलमिल गई व उन्होंने भारत को अपना आवास मानकर इसकी सेवा की।

2. राजनीतिक एवं आर्थिक एकता की स्थापना :-

अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारत में राजनीतिक एकता का अभाव था यद्यपि अशोक, समुद्रगुप्त, कनिष्क, अलाउद्दीन खिलजी एवं अकबर जैसे शासकों ने भारत में राजनीतिक एकता स्थापित करने का प्रयास किया था।

3. 1857 ई० का स्वतंत्रता संग्राम :- ब्रिटिश राज के पिछले एक सौ वर्षों के शोषण के परिणामस्वरूप 1857 ई० की क्रांति में भारतीय जनता ने इस राज को उखाड़ फेंकने का प्रयास किया यद्यपि अंग्रेजों ने इस प्रयास को कुचल दिया तथा क्रांतिकारी अपने उद्देश्यों को पूरा करने में असफल रहें।

4. धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आन्दोलन :- 19 वीं सदी में प्रारम्भ होने वाले धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आन्दोलनों ने जहाँ एक तरफ भारतीय धर्म तथा समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया तो दूसरी तरफ भारतीय राष्ट्रीय चेतना के उदय तथा विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

5. पश्चिमी विचारों एवं शिक्षा का प्रभाव :- आधुनिक पश्चिमी शिक्षा और विचारधारा के प्रचार तथा प्रसार ने भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत में अंग्रेजी भाषा को महत्व को 1835 ई० में लार्ड मैकाले की सिफारिश पर लार्ड विलियम बेंटिक ने लागू किया। यद्यपि इसके पिछे मैकाले का उद्देश्य भारतीयों को मानसिक रूप से सदा के लिए गुलाम बनाना था।

6. भारतीय समाचार पत्र एवं साहित्य :- आधुनिक शिक्षा - प्रणाली के परिणामस्वरूप भारत में कुछ नये सामाजिक वर्गों का उत्थान हुआ जिनमें शिक्षित वर्ग प्रमुख थे। इसी वर्ग ने भारत में प्रेस एवं साहित्य के उदय का मार्ग प्रशस्त किया। समाचार पत्रों के द्वारा राष्ट्रवादी राजनीतिक अधिकारों की मांग करते थे।

7. जाति विभेद की नीति :- 19 वीं सदी में भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के उदय एवं विकास का एक प्रमुख कारण अंग्रेजों की रंगभेद की नीति एवं भारतीयों के प्रति उनकी निरादर की भावना थी। सामाजिक न्याय एवं समानता के सिद्धान्त सिद्धान्तों की दुहाई देने वाले अंग्रेजों की इस प्रकार की नीति एवं व्यवहार ने भारतीयों के आत्म - सम्मान को बहुत ठेस पहुँचाई।

8. यातायात एवं संचार के साधनों का विकास:-

आधुनिक भारत में यातायात एवं संचार के साधनों के विकास ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया रेलों एवं सड़कों द्वारा भारत के विभिन्न भागों में होने वाले विद्रोह को दबाने के लिए शीघ्रता से सेनाएँ एवं गोला बारूद भेजा था जैसा कि 1857 ई० के विद्रोह को दबाने के लिए किया गया।

9. ऐतिहासिक खोजें:- ब्रिटिश साम्राज्य को नैतिक आधार प्रदान करने के लिए अनेक साम्राज्यवादी लेखकों ने भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति एवं इतिहास के बारे में विशेष धारणाएँ व्यक्त की थीं इन लेखकों ने प्रचार किया था कि प्राचीनकाल में भारत का धर्म तथा समाज पतित था।

10. सरकारी नौकरियों में भारतीयों के साथ पक्षपात:-

मध्य एवं उच्च वर्ग के अंग्रेज नागरिक भारत में उच्च पदों को अपने पुत्रों के लिए सुरक्षित समझते थे। यद्यपि 1833 ई० के चार्टर एक्ट एवं 1858 ई० की महारानी विक्टोरिया की घोषणा में यह कहा गया था कि सरकारी नौकरियों में नियुक्ति केवल योग्यता के आधार पर की जाएगी।

11. विदेशी घटनाओं का प्रभाव:- 19 वीं सदी के राष्ट्रीय आन्दोलनों को अमेरिका की स्वाधीनता तथा फ्रांसीसी क्रांति ने काफी हद तक प्रभावित किया, स्पेनी तथा पुर्तगाली साम्राज्यों के विरुद्ध दक्षिणी अमेरिकी देशों के संघर्ष ने भी साम्राज्यवादी भावनाओं को ठेस पहुँचाई,

12. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना:-

सन् 1870 के दशक के अन्त से और सन् 1880 के दशक के प्रारम्भ तक पर्याप्त राजनैतिक चेतना का संचार हो चुका था भारतीय राजनीति में कुशल राजनीतिज्ञों एवं बुद्धिजीवियों ने राष्ट्रीय हितों के लिए अखिल भारतीय स्तर पर संघर्ष करने का उत्साह दिखाई देने लगा था,

Ques2- 1935 एक्ट के गुण, दोष, विशेषताएँ का वर्णन कीजिए?

1935 एक्ट की विशेषता :-

भारत सरकार अधिनियम 1935 के अंतर्गत छः ब्रिटिश प्रांतों में द्वि-सदनात्मक प्रांतीय व्यवस्थापिका का प्रावधान था - विधानसभा तथा विधानपरिषद्। जिन प्रांतों में यह व्यवस्था की गई थी वे थे - बंगाल, असम, बिहार, मद्रास और संयुक्त प्रांत।

(i) प्रांतीय व्यवस्थापिका का अधिवेशन बुलाना तथा उसकी अवधि में वृद्धि करना।

(ii) स्वेच्छा से माह के लिए अध्यादेश जारी करना तथा नए अध्यादेश के जरिए उसकी अवधि में वृद्धि करना।

(iii) प्रांतीय व्यवस्थापिका की सलाह के बिना भी अपने निर्णय से विधि-निर्माण किया।

(iv) आपातकाल में प्रांतीय शासन पर पूर्ण आधिकार।

(v) मंत्रियों की नियुक्ति और उन्हें हटाना।

(vi) प्रांतीय विधानमंडल द्वारा पारित विधेयक पर निषेधाधिकार।

(vii) कार्यकारिणी परिषद् के सदस्यों का चयन और पदच्युत करना।

(viii) संविधान की विफलता घोषित कर शासन की सारी शक्तियों को अपने हाथ में केंद्रित करने का आधिकार।

1935 एक्ट के

(i) जिन विषयों के बारे में गवर्नर अपने मंत्रियों की सलाह से कार्य करते थे, उन पर भारतमंत्री का नियंत्रण खत्म कर दिया गया।

(ii) भारतमंत्री की परिषद् को भंग कर उसके स्थान पर परामर्शदात्री सभा की स्थापना की गई, जिसकी सदस्य संख्या कम से कम 3 और अधिक से अधिक निर्धारित की गई थी।

(iii) भारत मंत्री को अखिल भारतीय सेवाओं में कर्मचारियों की नियुक्ति एवं उनके वेतन-भत्ते के निर्धारण तथा भारत सरकार से त्रण लेने का आधिकार दिया गया।

(iv) उसे ब्रिटेन ब्रिटिश सम्राट को सलाह तथा जरूरत के अनुसार भारत के वायसराय और प्रांतीय गवर्नरों को आदेश देने का आधिकार प्रदान किया गया।

अन्य आधिनियम के

भारत में संघीय व्यवस्था प्रांतों में उत्तरदायी शासन और केंद्र में द्वैध शासन प्रणाली की स्थापना कर 1935 के आधिनियम ने संवैधानिक सुधार की

Date: / /
Page No.

दिशा में उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण योगदान किया परंतु यह भारतीयों की आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सका।

(i) प्रांतीय स्वायत्ता मात्र दिखावा थी क्योंकि इसके नाम पर प्रांतों को जो अधिकार दिए गए थे वे विधानमंडल और मंत्रिमंडल के न होकर गवर्नरों के थे

(ii) प्रांतीय स्वायत्तता के बावजूद प्रांतों पर वायसराय और केंद्रीय सरकार के नियंत्रण का प्रावधान था

(iii) भारतीयों की पूर्ण स्वाधीनता की मांग टालने का यह मार्ग था,

Ques3- उग्र राष्ट्रपंथ की विचारधारा, कार्यविधि गतिविधियों का संक्षिप्त में वर्णन कीजिए?

अग्रवादियों की विचारधारा

1. उद्देश्य :-
उदारवादी मानते थे कि इंग्लैंड के साथ संबंध भारत के हित में है। इसके विपरीत अग्रवादियों का मानना था कि ब्रिटिश शासन नहीं किया जा सकता, इसका तो अन्त किया जाना चाहिए,

Date: / /
Page No.

2. धार्मिक राष्ट्रवाद में विश्वास :-
उग्रवादी पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति से घृणा करते थे तथा भारतीय सभ्यता व संस्कृति को श्रेष्ठ मानते थे, उग्रवादी 19 वीं सदी में हुए सामाजिक, सांस्कृतिक पुनर्जागरण का परिणाम था तथा भारतीय होने का गर्व अनुभव करते थे,

3. आत्मशक्ति पर बल :-
अग्रवादियों का संवैधानिक तरीकों में विश्वास नहीं था वे याचना करके अपनी माँगें मनवाना पसन्द नहीं करते थे इस प्रकार की याचनापूर्ण नीति को उन्होंने 'राजनीतिक भिक्षावृत्ति' की संज्ञा दी थी उनका विचार था कि प्रार्थना करने से या भीख माँगने से राजनीतिक सत्ता प्राप्त नहीं होती।

4. जनता की शक्ति में विश्वास :-
अपने प्रारम्भिक चरण में राष्ट्रीय आन्दोलन जन आन्दोलन नहीं था तथा न ही उदारवादी नेताओं ने इसे जन आन्दोलन बनाने का प्रयास किया, अतः राष्ट्रीय आन्दोलन केवल उच्च वर्ग या उच्च मध्य वर्ग तक ही सीमित था,

उग्रवादियों की कार्यविधि

1. निष्क्रिय विरोध :-
उग्रवादियों का मुख्य साधन अथवा उनकी कार्य प्रणाली का मुख्य अंग निष्क्रिय विरोध था, इसका अर्थ था सरकार के उस प्रत्येक कार्य का विरोध करना जो जनता के हितों के विपरीत हो अथवा भारतीयों का दमन करने के लिए उठाया गया हो।

2. बहिष्कार :-
सक्रिय प्रतिरोध की दो विधियों में से एक थी - बहिष्कार या बायकाट बहिष्कार का अर्थ था विदेशी वस्तुओं, सरकारी नौकरियों, संस्थानों तथा उपाधियों का बहिष्कार करना। बहिष्कार को अस्त्र प्रयोग करने के बारे में 1905 में बंगाल के समाचारों - पत्रों 'संजीवनी' तथा 'अमृत बाजार पत्रिका' में लिखा गया।

3. स्वदेशी :-
उग्रवादियों ने सक्रिय विरोध के दूसरे भाग 'स्वदेशी' का भी बहिष्कार के साथ - साथ प्रचार किया, इसका तात्पर्य था विदेशी माल का बहिष्कार करके भारत में बने माल का प्रयोग करना।

4. राष्ट्रीय शिक्षा :-
उदारवादियों का झुकाव पश्चिमी शिक्षा की तरफ था, इसके विपरीत उग्रवादियों भारतीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक 'नवजागरण' के प्रतीक थे, वे राष्ट्रीय शिक्षा - प्रणाली के समर्थक थे, उन्होंने अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए राष्ट्रीय शिक्षा को अपना साधन बनाया।

5. आत्म - शक्ति एवं बलिदान :-
उग्रवादियों ने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए आत्म - शक्ति एवं बलिदान को साधन बनाया, उनका विश्वास था कि देशभक्तों की आत्म शक्ति एवं बलिदान ही देश की भलाई कर सकते हैं, बाल गंगाधर तिलक कहा करते थे कि प्रत्येक अंग्रेज जानता है कि वे इस देश में मुट्ठी भर हैं फिर भी उनमें प्रत्येक व्यक्ति हमें बेवकूफ बनाकर यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि वे आप कमजोर हैं तथा वे शक्तिशाली हैं।

उग्रवादियों आन्दोलन की गतिविधियाँ

महाराष्ट्र :-
महाराष्ट्र में उग्रवादी आन्दोलन के प्रमुख प्रणेता तिलक थे, तिलक एक

महान् देशभक्त तथा स्वतंत्रता प्रेमी थे, उन्होंने अपनी बुद्धि, विद्वता एवं त्याग के द्वारा सम्पूर्ण भारत वर्ष के लोगों का जीता, उन्होंने केसरी तथा मराठा नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन करके देश के नवयुवकों में आत्मविश्वास, आत्मसम्मान एवं त्याग व बलिदान की भावनाएँ विकसित की।

बंगाल :-
लार्ड कर्जन के शासकाल में जुलाई, 1905 ई० को भारतीय राष्ट्रीयता को कुचलने के लिए बंगाल के विभाजन की घोषणा की गई, यद्यपि इस योजना को वापस लेने के बारे में पहले से ही भारतीय प्रयत्न कर रहे थे परन्तु घोषणा के साथ ही बंगाल में जनता ने विरोध का उग्र रूप धारण कर लिया तथा 'बंगभंग विरोधी आन्दोलन' आरम्भ हो गया।

पंजाब :-
पंजाब में 19 वीं सदी के अन्तिम दशक से ही स्वदेशी आन्दोलन चल रहा था, 1895 ई० में उपनिवेशन बिल के अन्तर्गत कार्यवाही करने पर विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने का निर्णय लिया गया, इसमें 'आर्यसमाज' की विशेष भूमिका थी।

मद्रास :-
मद्रास प्रेसीडेंसी के दो क्षेत्रों में उग्रवादी विचारधारा विकसित हुई, ये थे- आन्ध्र का मुहाना क्षेत्र तथा दक्षिण में तिरुनेलवेली जिला वी० कृष्णास्वामी तथा जी० सुब्रह्मण्यम अय्यर इनके प्रमुख नेता थे। 'हिन्दू' तथा 'प्रकाशम' एवं क्रिस्टना पत्रिका' नामक अखबारों के माध्यम से उग्रवादी विचारधारा का मद्रास प्रेसीडेंसी में प्रसार हुआ।